आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 05-01-14

अपने ज्ञान से हम बच्चों इस पुरानी दुनिया और पुराने सम्बन्धों से सम्पूर्ण वैराग्य दिलाने वाले, बेहद के ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - इस पुरानी दुनिया में कोई भी सार नहीं है, इसलिए तुम्हें इससे दिल नहीं लगानी है, बाप की याद टूटी तो सजा खानी पड़ेगी.

हम जीवात्माओं ने पिछले ८४ जन्मो से अन्य देहधारीयों से ही प्रीत की है. जिसे हमें अल्पकालीन सुख की प्राप्ति हुई, लेकिन फिर भी आत्मा विकारों में फ़सते और ही दुखी, अशान्त बन गई. इसका मुख्य कारण है हम जीवात्माये दूसरे किसी भी देहधारी से प्यार करते है तो उसमें भी हमारा कोई सूक्ष्म में स्वार्थ होता ही हैं. जैसे कि एक माँ भी अपने बच्चे से प्यार करती है क्योंकि वह जानती है की "यह मेरा बच्चा हैं. उसके अन्दर मेरा खून हैं. यह मेरा क्रियेशन हैं. बड़ा होकर मेरा सहारा बनेगा. मेरी इच्छाये पुरी करेगा..” इसके सामने एक परमात्मा का प्यार सम्पूर्ण निस्स्वार्थ (unconditional love) होता है क्योंकि वह देह को देखता ही नहीं. उसको तो हम सब आत्मा ये ही दिखाई देती हैं. उसके सामने कोई बुरे संस्कार वाली आत्मा भी आती है तो वह उसे बड़े प्यार से, मिठास से वह आत्मा में गुण और शक्तियां भरेगा कि जिसे उसके बुरे संस्कार खत्म हो जाये और वह दुखी से सुखी हो जाये.

बाबा हमसे यही चाहते है कि हम उनसे सदा सच्चा रहें. अन्तर्मुखी होकर अपने में चेक करें कि हमसे क्या गलती हुई है और उसे बाप को बड़े सच्चे दिल से बता दे. उसमें हमारा ही फ़ायदा है क्योंकि वही तो पतित पावन भी है जो हमारी बिगड़ी को बना सके. वही सुख कर्ता दुख हर्ता भी है जो हमें कलियुग के दुखों से छुडाकर सतयुग के सच्चे सुख में ले जा सके.

बाबा ने आज की मुरली में हमें कई श्रीमत् भी दी है जिसे हम आज्ञाकारी बच्चे सदा फ़ोलो करते रहेंगे. इसी संकल्प के साथ हर श्रीमत् को एक बार बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे. जिसे बाबा हमारे में शक्ति भरेगा और हम उनकी हर श्रीमत् को बड़ी सच्चाई-सफ़ाई से फ़ोलो कर सकेंगे.

- बाप ने कहा, शिवभगवानुवाच अपने सालिग्रामों प्रति. शिव और सालिग्राम, दोनों ही निराकार है. भगवान भी एक ही होता है. यहाँ है शिवभगवानुवाच अपने रुहानी बच्चों प्रति. बाबा ने समझाया है कि बच्चों का अब कनेक्शन (सर्व-सम्बन्ध) है ही एक बाप से क्योंकि वही पतित-पावन, ज्ञान का सागर, स्वर्ग का वर्सा देने वाला है तो उनको ही याद करना है. बच्चों को अपने को आत्मा समझ उनको ही याद करना है.

- बाप कहते है अब यह पुरानी दुनिया में कोई सार नहीं है, इनसे दिल नहीं लगानी है. इनसे दिल लगाई तो तुम्हें दुख (सजा के रुप में) ही मिलेगा. एक बाप की याद से ही तुम्हारी सजायें कटती जायेंगी (दुखी से सुखी होते जायेंगे). ऐसा न हो बाप की याद टूट जाये फिर तुम्हें सजा खानी पड़े और पुरानी दुनिया में चले जाये.

- बाप कहते है अभी तुम हो संगम पर. ज्ञान सागर बाप द्वारा तुमको इस संगम पर ही ज्ञान मिलता है. बच्चों को ज्ञान सुनना है. भक्ति मार्ग के गीत भी नहीं सुनने हैं. तुम जानते हो इस ज्ञान से ही तुम्हारी सद्गति होती है. सद्गति दाता एक ही है फिर उनकी मत पर चलना है.

- बाप कहते है अपने को आत्मा समझो तो शरीर का भान न रहें. नहीं तो बाप की आज्ञा का उल्लंघन हो जाता है. देह-अहंकार से नुकसान बहुत होता है इसलिए देह सहित सब कुछ भूलना है. सिर्फ बाप को और घर को याद करना है. शरीर से काम करते भी बाप को याद करना है तो विकर्म भस्म हो जायेंगे.

- बाप कहते है जितना हो सके उतना अन्तर्मुखी भी रहना है मुख से कुछ कहना नहीं है. भूले होती है तो बाप को बताकर प्रायश्चित कर लेना है. भूलो को रिपिट नहीं करना हैं.

- बाप कहते है तुम्हें पिताव्रता या भगवानव्रता बनना है. जीते जी मरना है. एक बाप पर वारी जाना है. सदा उनकी श्रीमत् पर ही चलना है.

ॐ शांति.

Feedbacks/Queries/Suggestions to Atma Bhai on email
a.brahmin.soul@gmail.com.